International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में हिन्दी साहित्य का विकास

डॉ0 राकेश रंजन सिन्हा,
एसोशिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग, कुवंर सिंह महाविद्यालय,
लहेरियासराय, दरभंगा।

मध्यकाल में युग–परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य में भी उसके अनुरूप परिवर्तन हुए। ईरानियों ने सिन्धु को हिन्दू कहा जो कालान्तर में हिन्द बना और हिन्दी में फारसी भाषा के ईक प्रत्यय से 'हिन्दीक' बन गया। संज्ञा के रूप में हिन्दीक का अर्थ हिन्द का है। भाषा के रूप में इस शब्द का संज्ञा के रूप में प्रयोग किया गया और हिन्द की भाषा 'हिन्दी' कही जाने लगी। 1424–25 ई0 में शर्फूद्दीन यजदी द्वारा लिखित 'जफरनामा' में हिन्दी शब्द का पहली बार प्रयोग किया गया। हिन्दी भाषा का उदय शौरसेनी तथा अर्द्ध–मागधी भाषाओं से माना जाता है। इसके क्षेत्रीय रूपों में ब्रज, अवधी, मैथिली, खड़ी बोली, मालवी, राजस्थानी आदि है।

हिन्दी साहित्य के आदि या प्रारंभिक युग को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'वीरगाथा काल' नाम दिया है, परन्तु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और डॉ0 नागेन्द्र ने इसे आदिकाल कहना अधिक उचित माना है। आदि काल का प्रारंभ आठवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी तक माना जाता है अर्थात आठवीं सदी से लेकर कबीर आदि भक्त कवियों द्वारा 'भक्ति काल' की स्थापना तक यह युग छह–सात शताब्दियों तक फैला हुआ है। 'आदि काल' के अधिकांष वीरगाथात्मक लेखक चार कवि थे, जिन्होंने अपने शाहो संरक्षकों और सामंतो की प्रषस्ति का अतिरंजित एवं अतिषयोक्तिपूर्ण भाषा में यषोगान किया है। वीरगाथात्मक साहित्य में वीरगाथा और श्रृंगारिक वर्णन एक–दूसरे के अभिन्न अंग थे और आदिकालीन हिन्दी साहित्य की आधारभूमि मुख्यतः सामंतवादी थी। वीरगाथा साहित्य को 'रासो साहित्य' भी कहा जाता है। रासो साहित्य में "बीसलदेव रासा", हम्मीर रासों' और जगनिक कृत "परमाल रासो' बहुत उच्च कोटि का है। परन्तु सम्पूर्ण "रासो साहित्य" में सबसे अधिक प्रख्यात "पृथ्वीराज रासो' है, जो हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है। इसके लेखक चंदरबरदाई थे, जो कहा जाता है कि पृथ्वीराज चौहान तृतीय के सामंत और राजकवि थे। पथ्वीराज रासो की भाषा हिन्दी भाषा का वह रूप है। जिसमें

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राजस्थानी बोलियों का सम्मिश्रण है ओर जिसे "पिंगल शैली" कहा जाता है। अलंकार, छंद, भाव वस्तु आदि सारी दृष्टियों से यह ग्रंथ मध्यकाल में आदिकाल की सर्वश्रेष्ठ कृति कहा जा सकता है।

'रासो साहित्य' के अतिरिक्त आदिकालीन मध्यकाल के हिन्दी साहित्य को साहित्यिक एवं विषय–वस्तु की दृष्टि से पाँच अन्य वगा में भी विभाजित किया गया है, 1. सिद्ध साहित्य 2. जैन साहित्य 3. नाथ साहित्य 4. लौकिक साहित्य 5. गद्य साहितय।

सिद्ध साहित्यः– यह वह साहित्य है, जिसे बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा का प्रचार करने के लिए लोक–भाषा में लिख गया था। सिद्ध साहित्य रासो साहित्य से भिन्न साधारण लोकभाषा में राजदरबारो से दूर ग्रामीण जीवन को उजागर करता है। सिद्ध साहित्य में सरहप्पा, सरोजवज्र, राहुलभद्र एवं लईप्पा प्रमुख कवि थे। पूर्व मध्यकालीन भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के संबंध में यह सिद्ध साहित्य बहुत रोचक एवं उपयोगी जानकारी प्रदान करता है।

जैन साहित्य– जैन साधुओं ने भी पष्चिमी भाग में हिन्दी कविता के माध्यम से अपने मत का प्रचार किया। हिन्दी के इस जैन साहित्य को 'रास साहित्य' नाम भी दिया जाता है। यह 'रास साहित्य' गेय काव्य है, जिसे जैन स्थानों एवं मंदिरों में श्रावक ताल देकर गाया करते थे। इन जैन 'रास' ग्रंथों में समकालीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन की हमें अच्छी झलक प्राप्त होती है। इस कवियों ने राजाओं की वीरता, यद्धों आदि का विस्तार से विवेचन किया है परन्तु जैन धर्म के आदर्षो के अनुरूप हिंसा और वीरता के पश्चात् विरक्ति और मोक्ष का भाव प्रतिपादित करना कवियों का मुख्य लक्ष्य रहा है। जैन गन्थों में 'चंदन वाला रास' सबसे महत्वपूर्ण है।

नाथ सहित्यः– नाथपंथ सामन्ती समाज के वाम मार्ग के भोग–विलासी चरित्र का विरोध करते हुए वैराग्य पक्ष के प्रचारक थे। सांसारिक तृष्णाओं के परित्याग के लिए हठयोग साधना पर बल दिया करते थे। गोरखनाथ का "षष्टचक्र" और मत्स्येन्द्रनाथ का "भरतृहरि शतक" दो प्रमुख साहित्य उपलब्ध है। नाथ साहित्य ''उलटबाँसी'' की भी भाषा तीखी और कबीर के तरह की है। गोरखनाथ जी के विचारों का उनके अन्य अनुयायी कवियों,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जैसे चौरंगोनाथ, गोपीचंद चुड़करनाथ, भरथरी आदि ने अपनी अमर वाणी द्वारा प्रचार किया।

लौकिक साहित्यः– सल्तनत काल के अन्त में हिन्दी साहित्य के पद्य और गद्य मं कई लौकिक साहित्य की रचनाआ का बाहुल्य पाया गया है। इनमें लौकिक लोकाचार, गृहस्थ जीवन में नारी प्रेम, संतान पालन का दायित्व, सादगीपूर्ण जीवन और सामाजिक–साम्प्रदायिक सौहार्द जैसे विषयों पर जोर दिया गया। ऐसे साहित्य लेखन की परम्परा दिल्ली सल्तनत के पूर्व 11 वीं सदी से ही पाया जाता है। यह "ढ़ीला–मरूरा दोहा" "जयचन्द्र प्रकाष" और "जयगयंक जस चन्द्रिका" जैसे ग्रंथ में पाया जाता है।

परन्तु समकालीन लौकिक हिन्दी साहित्य के अमर कवि अमीर खुसरों है, जो सामंतवादी प्रवृतियों से पूर्णतः विलग समकालीन जन संस्कृति के प्रतीक है। साहित्य जन–जन क लिए होता है, अमीर खुसरो ने अपने लेखन में 'जनसाहित्य' के आदर्ष को बहुत सार्थक रूप दिया है। उन्होंने जन–जीवन के साथ धुल–मिलकर साहित्य की रचना की और जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ और मुकरियाँ लिखी। आदिकाल में खड़ी बोली में साहित्य–रचना करने वाले वे पहले साहित्यकार थे। कहा जाता है कि उन्होंने सौ ग्रंथों की रचना की, जिनमें अब केवल बीस–इक्कीस ग्रंथ ही उपलब्ध है, जैसे आंषिका, तुगलकनामा, किरान–उस–सादेन, मिफता–उल–फुतूह आदि।

गद्य साहित्यः– आदि काल में काव्य रचना के समान गद्य रचना के भी कुछ स्फुट प्रयास हुए। इस प्रसंग में हम "राउलवेल" नामक कृति का उल्लेख कर सकते है, जो दसवीं शताब्दी की रचना है। इसके अलावा "उक्ति–व्यक्ति प्रकरण" और "वर्ण–रत्नाकार" भी प्रमुख है।

भक्तिकाल– आदि काल की बहुरंगी साहित्यिक, सामाजिक ओर सास्कृतिक प्रवृतियों की पृष्ठभूमि में चौदहवीं शताब्दी में भक्ति साहित्य का जन्म हुआ, जो वस्तुतः लोक–जागृति और जन–सँस्कृति का प्रतीक था। सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में इस साहित्य ने सामाजिक और सांस्कृतिक एकता के साथ–साथ हिन्दू–मुस्लिम एकता को खूब बढ़ावा दिया। इसकी एक दूसरी महत्वपूर्ण विषेषता यह थी कि इसने जहाँ एक ओर वेदों, महाकाव्यों, पुराणों, (मुख्यतः भागवत पुराण) और स्मृतियों से प्रेरणा ग्रहण की, वहीं दूसरी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ओर वह प्रगतिषील भी था। संक्षेप में मध्यकाल में विकसित भक्ति साहित्य शास्त्रीय और प्रगतिषील पवृतियों का सुंदर समन्वय था।

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में धर्म–संबंधी दो धाराएँ प्रवाहित हुई–निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति। निर्गुण भक्ति धारा को हम पुनः दो भागों में विभाजित कर सकते है, ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी। इसी प्रकार सगुण भक्ति शाखा को भी दो भागों में विभाजित किया जा सकता है, राम भक्ति शाखा और कृष्ण भक्ति शाखा। भक्तिकाल के निर्गुण शाखा के कवियों में कबीर, नानक, रैदास, दादू दयाल तथा मालूक दास प्रमुख थे। हिन्दी साहित्य में कबीर का प्रमुख स्थान है। उन्होंने 'साखी' और 'पद' लिखे, जिनमें राजस्थानी, पंजाबी, खड़ी बोली और ब्रजभाषा के मिले जुले शब्द है। उनके प्रमुख कृ तियों में अनुराग सागर, अमर मूल, साखी, निर्भय ज्ञान, बीजक, रेखता, ज्ञान सागर आदि प्रमुख है। नानक ने गुरू ग्रन्थ साहेब की रचना की थी। उन्होंने कुछ भजन पंजाबी में लिखे और उनकी कुछ कविताएँ हिन्दी में है। उनमें ब्रज भाषा, खड़ी बोली और पंजाबी के शब्द मिलते है।

रैदास, कबीर के समकालीन है। इनके कुछ पद ही 'बानी' के नाम से 'सन्तबानी सीरोज' में मिलते है। 'गुरू ग्रन्थ साहब' में इनके 40 पद संग्रहीत है। इन पदों की भाषा सरल है, इसलिए लोगों ने आसानी से इन्हें ग्रहण किया।

दादू दयाल ने पंजाबी और गुजराती में पद लिखें। इसकी भाषा मिली–जुली पष्चिमी हिन्दी है, जिसमें राजस्थानी की प्रधानता है। इनकी रचनाओं में कहीं–कहीं अरबी–फारसी के शब्द मिलते है।

मलूक दास की रचनाओं में 'रत्नखान' और ज्ञानबोध प्रसिद्ध है। इनकी भाषा में अरबी और फारसी के शब्द मिलते है। इन्होंने कुछ पद्य खड़ी बोली में भी लिखें है।

प्रेम मार्गियों का मानना था कि इस्लामो रहस्यवाद और भारतीय प्रेमगाथा, लोकप्रिय दन्तकथाएँ और भक्ति गीतों को लेकर एक नए किस्म के साहित्य की रचना करनी चाहिए, ताकि इस्लाम और हिन्दू संस्कृति के ताल–मेल से एक संष्लेषात्मक संस्कृ ति का निर्माण किया जा सके। इसमें मुल्ला दाउद की 'चन्दायन' कुतुबन की 'मृगावती'

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और मालिक मोहम्मद जायसी का "पद्यमावत" उल्लेखनीय है। फलतः इस काल में हिन्दी साहित्य में कई अरबी और फारसी शब्दों के प्रचलन से हिन्दी शब्दकोष धनी होता चला गया।

सगुन ईष्वर की भक्ति के अन्तर्गत कवियों ने राम और कृष्ण–भक्ति पर ग्रन्थ लिखे। तुलसीदास ने राम को ब्रह्म तथा सीता को प्रकृति की संज्ञा दी। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में रामचरितमानस, विनय पत्रिका, गीतावली, दोहावली, कवितावली तथा जानकी मंगल आदि है। तुलसीदास की भाषा में अवधी और ब्रज के अतिरिक्त राजस्थानी और बुन्देलखण्डी शब्दों का प्रयोग मिलता है। तुलसीदास के समकालीन केषवदास ने 'राम चन्द्रिका' लिखी। कृष्ण भक्त सूरदास ने 'सूरसारावली', 'साहित्य लहरी' और 'सूरसागर' नामक ग्रन्थ लिखें और इनकी काव्य भाषा ब्रज है। मीराबाई जो श्री कृष्ण की भक्त थी, उनकी प्रमुख रचनाएँ 'गीत गोविन्द टीका', 'राग गोविन्द', 'राग सोरठ' है। इनकी भाषा राजस्थानी है, परन्तु इन्होंने कुछ पद साहित्यिक भाषा में लिखें है। रसखान की 'प्रेम वाटिका' और 'सुजान रसखान प्रसिद्ध रचना है। इनकी भाषा विषुद्ध ब्रज भाषा है।

भक्ति युग हिन्दी युग का स्वर्गिम युग था। मुगलकाल में भी यह भक्तिधारा प्रवाहित होती रहीं और बाद में रीति काव्य में परिवतर्तित हो गई। हिन्दी साहित्य का मुगल युग परवर्ती भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन साहित्य का युग कहा जाता है।

मुगलकाल में अकबर का काल हिन्दी साहित्य के विकास का काल था। उसकी उदारता और धार्मिक सहनषीलता की नीति ने हिन्दो–साहित्य के निर्माण का मार्ग प्रषस्त किया। उसके समय में हिन्दी को राजकीय संरक्षण प्रदान किया गया। अकबर के समय में हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकारों में राजा बीरबल, राजा मानसिंह, राजा भगवानदास, नरहरि, सूरदास, तुलसीदास, रसखान आदि थे। कर्ण और नरहरि सहाय अकबर के दरबारी कवि थे। नरहरि सहाय के अनुरोध पर अकबर ने गोहत्या बंद करने का आदेष जारी किया था। रूकमणी मंगल और कवित्त श्रृंगार नरहरि की प्रमुख रचना है। बीरबल 'ब्रह्म' उप नाम से कविता लिख्ता था। अब्दुर्रहीम संस्कृत, अरबी, फारसी और हिन्दी काव्य के पूर्ण मर्मज्ञ मुस्लिम कवि थे। इनकी प्रसिद्ध रचना रहीम दोहावली है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तुलसीदास अकबर के समकालीन थे परन्तु उनका राजदरबार से कोई संबंध नहीं था। सूरदास भी इस काल के प्रमुख कवि थे।

अकबर के भाँति जहाँगीर ने भी बूटा, राजा सूरज सिंह, राममनोहर लाल और बिषनदास जैसे हिन्दी के विद्वानों को संरक्षण दिया। जहाँगीर के समय हिन्दी के सर्वश्रेष्ट कवि केषवदास थे। जहाँगीर का भाई दानियाल भी हिन्दी में कविताएँ लिखता था।

शाहजहाँ के काल में रीतिकालीन साहित्य, जिसे कुछ विद्वानों ने "श्रृंगारकाल" की भी संज्ञा दी है, का पूर्ण विकास हुआ। शाहजहाँ के दरबार में सुन्दर दास, चिन्तामणि और कबीन्द्र आचार्य और सेनापति प्रमुख हिन्दी साहित्यकार थे। कबीन्द्र आचार्य के कहने पर ही शाहजहाँ ने वाराणसी में तीर्थयात्रा कर समाप्त कर दिया था। सेनापति को अपने प्रकृति प्रेम के कारण भारत का वड्सवर्थ कहा जाता है। उसकी प्रसिद्ध कृति कवित रत्नाकार है।

औरंगजेब अपनी सैनिक व्यस्तता के कारण हिन्दी साहित्य के विकास पर कोई ध्यान नहीं दे सका।

जोधपुर के राजा जसवन्त सिंह की रूचि हिन्दी भाषा में थी। उन्होंने ब्रज भाषा में "भाषा भूषण" नामक ग्रन्थ लिखा। बिहारी लाल को मिर्जा राजा जयसिंह का आश्रय प्राप्त था। मिर्जाराजा ने उन्हें राजकवि की पदवी से विभूषित किया था। बिहारी ने सतसई की रचना की है। इसी प्रकार भूषण ने षिवराज भूषण, षिवबावनी, क्षत्रसाल दषक आदि की रचना की। भूषण की काव्य भाषा ब्रज है, किन्तु उन्होंने अरबी, फारसी, अपभ्रंष, राजस्थानी, बुन्देलखण्डी, मराठी शब्दों का भी खुल कर प्रयोग किया है।

इस तरह हम देखते है कि सम्पूर्ण मध्य काल में ब्रजभाषा एवं अवधी जैसी हिन्दी की बोलियों ने भी फारसी शब्दावली का खुल कर प्रयोग किया, जैसा की मलिक मोहम्मद जायसी के पद्मावत और कबीर की रचनाओं से प्रकट है। पंजाबी पर फारसी कर असर गुरू नानक और उनके उत्तराधिकारियों के भजनों एवं कथनों में देखा जा सकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इस तरह भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में सास्कृतिक संष्लेषन की प्रक्रिया जो बारहवी शती के उत्तरार्ध में आरंभ हुई वह लगभग साढ़े छः सौ वर्षो तक लगातार चलती रही।

संदर्भ ग्रन्थः–

1. रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य की भूमिका
3. डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी – कबीर
4. ताराचन्द – इनफ्लुएन्स ऑफ इस्लाम ऑन इण्डियन कल्चर
5. गुलाबराय – हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास
6. विष्वनाथ मिश्र – हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग 2
7. डॉ0 नागेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास
8. प्रोफेसर फलेष्वर सिंह – मध्यकालीन भारत का इतिहास
9. बनारसी प्रसाद सक्सेना – हिस्ट्री ऑफ शाहजहाँ ऑफ देहली
10. मिश्रबन्धु, विनोद – हिन्दी शब्द सागर
11. डॉ0 लाइक अहमद – मध्यकालीन भारतीय संस्कृति
12. अजीज अहमद – स्टडीज इन इस्लामिक कल्चर इन दि इण्डियन इनवाइरनमेंट